गौतम ऋषि की शिवभक्ति*

गौतम महर्षि की पत्नी अहिल्या थी जिसके भगवान् राम द्वारा उद्धार की कथा से सभी लोग परिचित हैं। गौतम महर्षि ने ही तपस्या द्वारा शिवजी को प्रसन्न कर त्र्यम्बक ज्योतिर्लिंग को प्रकट किया था। वे ही गोदावरी को धरती पर ले आये थे।

स्कंदपुराण की एक कथा के अनुसार पूर्वकाल में जब महर्षि गौतम के शाप से उनकी धर्मपत्नी अहिल्या देवी शिलारूपा हो गयीं, तब उनके पुत्र शतानन्दजी ने विनयपूर्वक प्रार्थना करते हुए कहा–'पिताजी! इतिहास, पुराण तथा समस्त उपनिषदों का चिन्तन करके मेरी माता की शुद्धि का कोई उपाय बताइये, मैं इसका अनुष्ठान करूँगा, अन्यथा अपने प्राणों का त्याग कर दूँगा।' यह सुनकर गौतमजी ने दीर्घकालतक ध्यान करने के पश्चात् अपने पुत्र से कहा–'वत्स! आत्मघात बहुत बड़ा पाप है, उसे करने का दुःसाहस न करना। मैंने तुम्हारी माता की शुद्धि का निमित्त जान लिया। जिस समय भगवान् विष्णु रावण का वध करने के लिये सूर्यवंश में मनुष्य रूप में अवतार लेंगे, उस समय उन्हीं के चरणों का स्पर्श होने से तुम्हारी माता की शुद्धि होगी। अतः बेटा! तुम उस शुभ समय की प्रतीक्षा करो। यह सब मैंने दिव्य दृष्टि से देखा है।'

यह सुनकर मातृवत्सल शतानन्द बड़े प्रसन्न हुए और 'बहुत अच्छा' कहकर उस शुभ अवसर की प्रतीक्षा करने लगे। तदनन्तर दीर्घकाल के बाद श्रीरामचन्द्रजी के रूप में विष्णुजी का दशरथजी के यहाँ अवतार हुआ तब विश्वामित्र अपने यज्ञ की रक्षा के लिये तथा यज्ञकर्म का विनाश करनेवाले राक्षसों का संहार कराने के लिये उन भगवान् श्रीराम को अपने आश्रम पर ले आये। यज्ञ की रक्षा करते हुए उनके द्वारा सभी भयंकर राक्षस मारे गये। तत्पश्चात् सीताजी के स्वयंवर तथा उसमें राजाओं के शुभागमन का समाचार सुनकर विश्वामित्रजी लक्ष्मणसहित श्रीराम को जनकपुर ले गये। मार्ग में गौतमजी का आश्रम मिला। वहाँ महती शिलारूप अहिल्या को देखकर विश्वामित्रजी ने श्रीराम से कहा–'वत्स इस शिला का स्पर्श करो। ये महर्षि गौतम की पत्नी अहिल्या हैं, जो शाप के कारण शिला हो गयी हैं, तुम्हारे स्पर्श से शुद्ध होकर पुनः मानवस्वरूप को प्राप्त होंगी।' ऐसा सुनकर श्रीराम ने कौतूहलवश उस शिला का स्पर्श किया। उनके स्पर्श करते ही वह शिला दिव्य रूपधारिणी नारी हो गयी। तब उन्होंने अपने पूर्वकर्म को स्मरण करके लज्जित हो गौतमजी को प्रणाम किया और कहा–'प्राणनाथ! मुझे कोई प्रायश्चित्त बताइये, दुष्कर होनेपर भी मैं उसका अनुष्ठान करूँगी।'

बहुत देरतक सोच–विचार कर गौतमजी ने कहा–'सौ चान्द्रायण तथा एक हजार कृच्छ्रव्रत करो। फिर तीर्थयात्रा में तत्पर हो अड़सठ तीर्थों में भ्रमण करके वहाँ के देवताओं का दर्शन करो। उन

---

* गौतम की शिवभक्ति का उल्लेख शिवपुराण, ब्रह्मपुराण तथा स्कंद आदि पुराणों में पाया जाता है। यहाँ पर उनकी भक्ति के कुछ प्रसंगों की ही चर्चा की जायगी।

सबके दर्शन से तुम पूर्णतः शुद्ध हो जाओगी।' 'बहुत अच्छा' कहकर अहिल्या ने मुनि की आज्ञा शिरोधार्य की और काशी आदि अड़सठ तीर्थों* में क्रमशः घूमती हुई वहाँ के शिवलिंगों का भक्तिपूर्वक पूजन किया। अन्त में वे हाटकेश्वर तीर्थ को गयीं। वहाँ पातालवासी भगवान् हाटकेश्वर का दर्शन करने के लिये दुष्कर तपस्या करने लगीं। अपने नाम से शिवलिंग की स्थापना करके चन्दन, फूल और अनुलेपन से उसका त्रिकाल पूजन करती हुई अहिल्या का बहुत समय व्यतीत हो गया। परन्तु हाटकेश्वर का दर्शन नहीं हुआ। किसी समय अहिल्यानन्दन शतानन्दजी अपनी माता को खोजते हुए हाटकेश्वर क्षेत्र में आये। वहाँ उन्हें बड़ी भारी तपस्या में संलग्न देख प्रणाम करके दुःखी होकर बोले–'माँ! कठोर तपस्या से क्यों शरीर को कष्ट देती हो? अड़सठ तीर्थों में जो शिवलिंग हैं, उनका दर्शन तो तुमने कर ही लिया है, यहाँ कोई भी मनुष्य पातालवासी हाटकेश्वर का दर्शन नहीं कर पाता। पिताजी ने जो शुद्धि बतायी थी, वह तो हो ही गयी। अतः अपने आश्रम को लौट चलो।'

अहिल्या ने कहा–वत्स! जबतक हाटकेश्वर शिव का दर्शन नहीं कर लूँगी, तबतक घर नहीं चलूँगी, ऐसा निश्चय कर लिया है। यह सुनकर शतानन्द ने कहा–यदि ऐसी बात है तो मुझे पिता के पास लौटकर नहीं जाना है। ऐसा कहकर उन्होंने भी शिवलिंग की स्थापना की और छः–छः दिनों पर भोजन करते हुए व्रतचर्या में लग गये। उनका भी बहुत समय बीत गया। परंतु उन दोनों पर भगवान् शिव सन्तुष्ट नहीं हुए। तदनन्तर दीर्घकाल के बाद महामुनि गौतमजी भी पुत्र को देखने की इच्छा से वहाँ आ गये। पत्नी और पुत्र को तपस्या करते देख पहले तो वे बड़े प्रसन्न हुए। फिर दुःखी होकर बोले–'अहो मेरा बेटा बहुत दुर्बल हो गया, अब इसे तपस्या से निवृत्त करके ले चलूँ।' उनकी बात सुनकर शतानन्दजी ने कहा–'तात! मैंने माताजी को तपस्या छोड़कर घर लौटने के लिये कहा; परन्तु ये हाटकेश्वर का दर्शन किये बिना घर लौटने को राजी नहीं हुई। अतः मैं भी माता के बिना नहीं लौटूँगा, यह मेरा निश्चय है।'

गौतमजी ने कहा–बेटा यदि तुम्हारा और तुम्हारी माता का यही निश्चय है, तो मैं भी तपस्या करता हूँ। मैं अपने तप से तुम्हारी माँ को हाटकेश्वर का दर्शन कराऊँगा। ऐसा कहकर वे भी तपस्या में लग गये। सौ वर्षोंतक एक दिन का अन्तर देकर भोजन करते रहे, तदनन्तर छः–छः दिन पर भोजन करने लगे। फिर उतने–उतने ही समयतक क्रमशः फल और जल पर रहे। इसके बाद सौ वर्षोंतक वे केवल वायु पीकर रहे। तब पृथ्वी फोड़कर बारह सूर्यों के समान तेजस्वी शिवलिंग प्रकट हुआ। उसी समय भगवान् चन्द्रशेखर ने मुनि गौतम को प्रत्यक्ष दर्शन देकर कहा–'सुव्रत! मैं तुम्हारी तपस्या से संतुष्ट हूँ। महामुने! यही मेरा हाटकेश्वर लिंग है, जो तुम्हारी भक्ति देखकर पाताल से प्रकट हुआ है। इसी के दर्शन के लिये तुमने पुत्र और पत्नीसहित तप किया है। तुम सब लोगों का मनोरथ

* इन अड़सठ तीर्थों के नाम इसी पुस्तक में अन्यत्र दिये गये हैं। ये सभी शैवक्षेत्र हैं।

सफल हुआ। अब तुम्हारी देवरूपिणी पत्नी उस हाटकेश्वर लिंग का दर्शन करें; जिससे इन्हें अड़सठ क्षेत्रों की यात्रा का फल प्राप्त हो। तुम भी कोई अभीष्ट वर माँगो।'

गौतमजी ने कहा–पातालवासी हाटकेश्वर शिव का एक बार दर्शन करने से जो फल प्राप्त होता है, वही पुण्य उस शिवलिंग के दर्शन से भी प्राप्त हो। इस लिंग के प्रभाव तथा अहिल्येश्वर तथा शतानन्देश्वर के दर्शन से सब मनुष्य शुद्ध हो स्वर्गलोक को जायँ।

शिवपुराण की कोटिरुद्रसंहिता (अध्याय 24 – 26) में गौतम महर्षि से संबंधित कथा इस प्रकार है।

ब्रह्मगिरि पर गौतम ने दस हजार वर्षोंतक तपस्या की थी। एक समय वहाँ सौ वर्षोंतक बड़ा भयंकर अकाल पड़ा। ऐसी स्थिति में गौतम ने वरुणदेव को प्रसन्न कर अक्षय जल का एक कुण्ड प्राप्त किया। गौतम के आश्रम में जल की उपस्थिति की बात जानकर देश–देशान्तर से हजारों ऋषि–मुनि, पशु–पक्षी आदि अनेक जीव आकर वहाँ आसपास रहने लगे। एक बार वहाँ गौतम के आश्रम में बसे ब्राह्मणों की स्त्रियाँ जल के प्रसंग में अहिल्या से नाराज हो गयीं। उन्होंने अपने पतियों को उकसाया। फलस्वरूप गौतम से बदला लेने के लिये उनके पतियों ने गणेशजी की उपासना की तथा किसी उपाय से गौतम को आश्रम से बाहर निकालने के लिये उनसे प्रार्थना की। अन्त में गणेशजी के वरदान के फलस्वरूप एक ऐसा अवसर प्रस्तुत हुआ जिससे निर्दोष गौतम पर गोहत्या का कलंक लगाकर ब्रह्मणों ने उन्हें आश्रम से दूर चले जाने को कहा। गौतम के द्वारा अपनी शुद्धि का उपाय पूछे जाने पर ब्रह्मणों ने कहा कि यहाँ गंगाजी को ले आकर उन्हीं के जल से स्नान करो तथा एक करोड़ पार्थिवलिंग बनाकर महादेवजी की आराधना करो। फिर गंगा में स्नान करके इस पर्वत की 11 बार परिक्रमा करो। तत्पश्चात् सौ घड़ों के जल से पार्थिवलिंग को स्नान कराओ।

ऋषियों की उपर्युक्त बात को स्वीकार कर गौतम ने उस पर्वत की परिक्रमा करने के पश्चात् पार्थिवलिंगों का निर्माण करके उनका पूजन किया। पत्नीसहित गौतम ऋषि के इस प्रकार आराधना करने पर संतुष्ट हुए भगवान् शिव वहाँ शिवा और प्रमथगणों के साथ प्रकट हो गये। उन्हें देखकर स्तुति प्रणाम के बाद गौतमजी ने कहा 'देव! मुझे निष्पाप कर दीजिये।' भगवान् शिव ने जवाब दिया– 'मुने! तुम सदा हि निष्पाप हो। दुष्ट ब्राह्मणों ने तुम्हारे साथ छल किया है। सदा मेरी भक्ति में तत्पर रहनेवाले क्या तुम पापी हो? मुने! जिन लोगों ने तुम पर अत्याचार किया है वे ही पापी और हत्यारे हैं।' इसे सुनकर गौतमजी बोले नाथ आप सच कहते हैं तथापि जो पाँच आदमियों ने कह दिया है वह अन्यथा नहीं हो सकता। अत: यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे गंगा प्रदान कीजिये।

तब शंकरजी ने गंगाजल को गौतम मुनि को दे दिया। वह जल स्त्री का रूप धारण करके वहाँ खड़ा हुआ। गौतम ने उन गंगाजी की स्तुति करके नमस्कार किया। तदनन्तर शिवजी ने गंगा से कहा–देवि! तुम मुनि को पवित्र करो और तुरंत वापस न जाकर वैवस्वत मनु के अट्ठाईसवें

कलियुगतक यहीं रहो। गंगा ने कहा–महेश्वर! यदि मेरा माहात्म्य सब नदियों से अधिक हो और अम्बिका तथा गणों के साथ आप भी यहाँ रहें, तभी मैं इस धरातल पर रहूँगी। गंगा की बात को भगवान् शिव ने स्वीकार कर लिया। इसके बाद सभी देवगणों ने वहाँ आकर भगवान् शिव की स्तुति–पूजा की। देवताओं ने उस समय गंगा से यह भी कहा कि बृहस्पतिजी जब–जब सिंह राशि पर स्थित होंगे, तब–तब हम सब लोग यहाँ आया करेंगे।

इस प्रकार देवताओं तथा महर्षि गौतम के प्रार्थना करने पर भगवान् शंकर एवं गंगाजी दोनों वहाँ स्थित हो गये। वहाँ की गंगा गौतमी(गोदावरी) नाम से विख्यात हुई और भगवान् शिव का ज्योतिर्मय लिंग त्र्यम्बक कहलाया। उसी दिन से लेकर जब–जब बृहस्पति सिंह राशि में स्थित होते हैं तब–तब सब तीर्थ, क्षेत्र, देवता, पुष्कर आदि सरोवर, गंगा आदि नदियाँ तथा श्रीविष्णु आदि देवगण गौतमी के तट पर पधारते और वास करते हैं। गौतम के द्वारा पूजित त्र्यम्बक नामक ज्योतिर्लिंग इस लोक में समस्त अभीष्टों को देनेवाला तथा परलोक में मोक्ष प्रदान करनेवाला है।

शिवपुराण की उपर्युक्त कथा से भिन्न एक दूसरी कथा ब्रह्मपुराण में पायी जाती है। वह कथा कुछ इस प्रकार है। भगवान् शंकर की जटा में जो दिव्य जल आकर स्थित हुआ, उसके दो भेद हुए; क्योंकि उसे पृथ्वी पर उतारनेवाले दो व्यक्ति थे। उस जल के एक भाग को तो व्रत, दान और समाधि में तत्पर रहनेवाले गौतम नामक ब्राह्मण ने भगवान् शिव की आराधना करके भूतलतक पहुँचाया तथा दूसरा भाग बलवान् क्षत्रिय राजा भगीरथ ने इस पृथ्वी पर उतारा। इसके लिये उन्हें तपस्या द्वारा भगवान् शंकर की आराधना करनी पड़ी।

एक समय की बात है, महर्षि गौतम कैलास पर्वत पर गये और मौनभाव से कुशा बिछाकर उसपर बैठे; फिर पवित्र होकर स्तोत्र का गान करने लगे।

गौतम बोले–भोग की अभिलाषा रखनेवाले जीवों को मनोवांछित भोग प्रदान करने के लिये पार्वतीसहित भगवान् शंकर उत्तम गुणों से युक्त आठ विराट् स्वरूप धारण करते हैं। इस प्रकार विद्वान् पुरुष प्रतिदिन भगवान् महादेवजी की स्तुति किया करते हैं। महेश्वर का जो पृथ्वीमय शरीर है, वह अपने विषयों द्वारा सुख पहुँचाने, समस्त चराचर जगत् का भरण–पोषण करने, उसकी सम्पत्ति बढ़ाने तथा सबका अभ्युदय करने के लिये है। शान्तिमय शरीरवाले भगवान् शिव ने जगत् की सृष्टि, पालन और संहार करने के लिये पृथ्वी के आधारभूत जल का स्वरूप धारण किया है। उनका वह लोकप्रतिष्ठित रूप सब लोगों को सुख पहुँचाने तथा धर्म की सिद्धि करने का भी हेतू है। महेश्वर! आपने समय की व्यवस्था करने, अमृत का स्त्रोत बहाने, जीवों की सृष्टि, पालन एवं संहार करने तथा प्रजा को मोद, सुख एवं उन्नति का अवसर देने के लिये सूर्य, चन्द्रमा तथा अग्नि का शरीर धारण किया है। ईश! आपने जो वायु का रूप ग्रहण किया है, उसमें भी एक रहस्य है। सब लोग प्रतिदिन बढ़ें, चलें, फिरें, शक्ति का उपार्जन करें, अक्षरों का उच्चारण कर सकें, जीवन कायम रहे और अनेक प्रकार के

आमोद-प्रमोद की सृष्टि हो, इसीलिये आपका वह रूप है। भगवन्! इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि अपने आपको आप ही ठीक-ठीक जानते हैं। भेद (अवकाश) के बिना न कोई क्रिया हो सकती है न धर्म हो सकता है, न अपने और पराये का बोध होगा, न दिशा, अन्तरिक्ष, द्युलोक, पृथ्वी तथा भोग और मोक्ष का ही अन्तर जान पड़ेगा। अत: महेश्वर! आपने यह आकाशरूप ग्रहण किया है। धर्म की व्यवस्था करने का निश्चय करके आपने ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, उनकी शाखाओं और शास्त्रों का विभाग किया है तथा लोक में भी इसी उद्देश्य से गाथाओं, स्मृतियों और पुराणों का प्रसार किया है। ये सब शब्दरूप ही हैं। शम्भो! यजमान्, यज्ञ, यज्ञों के साधन, ऋत्विक्, यज्ञ का स्थान, फल, देश और काल ये सब आप ही हैं। आप ही परमार्थ तत्त्व हैं। विद्वान् पुरुष आपके शरीर को यज्ञमय बतलाते हैं। केवल वाग्विलास करने से क्या लाभ-कर्ता, दाता, प्रतिनिधि, दान, सर्वज्ञ, साक्षी, परम पुरुष, सबका अन्तरात्मा तथा परमार्थस्वरूप सब कुछ आप ही हैं। भगवन्! वेद, शास्त्र और गुरु भी आप के तत्त्व का भली-भाँति उपदेश नहीं कर सके हैं। निश्चय ही आपतक बुद्धि आदि की भी पहुँच नहीं है। आप अजन्मा, अप्रमेय और शिवशब्द से वाच्य हैं, आप ही सत्य हैं। आपको नमस्कार है। किसी समय भगवान् शिव ने अपनी प्रकृति को इस भाव से देखा कि यह मेरी सम्पत्ति है; उसी समय वे एक से अनेक हो गये, विश्वरूप में प्रकट हो गये। वास्तव में उनका प्रभाव अतर्क्य और अचिन्त्य है। भगवान् शिव की प्रिया शिवा देवी भी नित्य हैं। भव(भगवान् शंकर) में उनका भाव(हार्दिक अनुराग) पूर्णरूप से बढ़ा हुआ है; वे इस भव(संसार) की उत्पत्ति में स्वयं कारण हैं, तथा सर्वकारण महेश्वर के आश्रित हैं। शिवा समस्त शुभ लक्षणों से सम्पन्न तथा विश्वविधाता शिव की विलक्षण शक्ति हैं। संसार की उत्पत्ति, स्थिति, अन्न की वृद्धि तथा लय- ये सनातन भाव जहाँ होते रहते हैं, वह एकमात्र पार्वतीदेवी का ही स्वरूप है। वे भगवान् शंकर की प्राणवल्लभा हैं। उनके लिये कुछ भी असाध्य नहीं है। समस्त जीव जिनके लिये अन्नदान देते और तपस्या करते हैं, वे जगज्जननी माता पार्वती ही हैं। उनकी उत्तम कीर्ति बहुत बड़ी है। वे शिव की प्रियतमा हैं। इन्द्र भी जिनकी कृपादृष्टि चाहते हैं, जिनका नाम लेने से मंगल की प्राप्ति होती है, जो सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त हो इसे निर्मल बनाती हैं, ये भगवती उमा ही हैं। उनका रूप सदा चन्द्रमा के समान ही मनोरम है। जिनके प्रसाद से ब्रह्मा आदि चराचर जीवों की बुद्धि, नेत्र, चेतना और मन में सदा सुख की प्राप्ति होती है, वे जगद्गुरु शिव की सुन्दरी शक्ति शिवा वाणी की अधीश्वरी हैं। आज ब्रह्माजी का भी मन मलिन हो रहा है, फिर अन्य जीवों की तो बात ही क्या-यह सोचकर जगन्माता उमा ने अनेक उपायों से सम्पूर्ण जगत् को पवित्र करने के लिये गंगा का अवतार धारण किया है। श्रुतियों को देखकर तथा सब प्रमाणों से भगवान् शंकर की प्रभुता पर विश्वास करके लोग जो धर्म का अनुष्ठान करते और उनके फलस्वरूप जो उत्तम भोग भोगते हैं, यह भगवान् सदाशिव की ही विभूति है। वैदिक तथा लौकिक कार्य, क्रिया, कारक और साधनों का जो सबसे उत्तम एवं प्रिय साध्य है, वह अनादि कर्त्ता शिव की प्राप्ति ही है।

जो सर्वश्रेष्ठ ब्रह्म, परप्रधान, सारभूत और उपासना के योग्य है, जिसका ध्यान तथा जिसकी प्राप्ति करके श्रेष्ठ योगी पुरुष मुक्त हो जाते- पुनः संसार में जन्म नहीं लेते, वे भगवान् उमापति ही मोक्ष हैं। माता पार्वती! भगवान् शंकर जगत् का कल्याण करने के लिये जैसे-जैसे अपार मायामय रूप ध ारण करते हैं, वैसे-ही-वैसे तुम भी उनके योग्य रूप धारण करती हो। इस प्रकार तुममें पातिव्रत्य जाग्रत् रहता है।

गौतमजी के इस प्रकार स्तुति करने पर वृषभांकित ध्वजावाले साक्षात् भगवान् शिव उनके सामने प्रकट हुए और प्रसन्न होकर बोले-'गौतम! तुम्हारी भक्ति, स्तुति, तथा व्रत से मैं सन्तुष्ट हूँ। माँगो, तुम्हें क्या दूँ? जो वस्तु देवताओं के लिये भी दुर्लभ हो, वह भी तुम माँग सकते हो।'

गौतम ने कहा-जगदीश्वर! समस्त लोकों को पवित्र करनेवाली इन पावन देवी को, जो आपकी जटा में स्थित और आपको परम प्रिय हैं, ब्रह्मगिरि पर छोड़ दीजिये। ये समुद्र में मिलनेतक सबके लिये तीर्थरूप होकर रहें। इसमें स्नान करनेमात्र से मन, वाणी, और शरीर द्वारा किये हुए ब्रह्महत्या आदि समस्त पाप नष्ट हो जायँ। ग्रहण आदि पुण्य अवसरों पर अन्य तीर्थो में स्नान करने से जो फल प्राप्त होते हैं, वे इनके स्मरणमात्र से ही प्राप्त हो जायँ। ये समुद्र में पहुँचनेतक जहाँ-जहाँ जायँ, वहाँ-वहाँ आप अवश्य रहें। यह श्रेष्ठ वर मुझे प्राप्त हो। तथा इनके तट से एक योजन से लेकर दस योजनतक की दूरी के भीतर आये हुए महापातकी मनुष्य भी यदि स्नान किये बिना ही मृत्यु को प्राप्त हो जायँ तो वे भी मुक्ति के भागी हों।

गौतम की यह बात सुनकर भगवान् शंकर बोले-'इससे बढ़कर दूसरा कोई तीर्थ न तो हुआ है न होगा; यह बात सत्य है, सत्य है, सत्य है और वेद में भी निश्चित किया गया है कि गौतमी गंगा (गोदावरी) सब तीर्थों से अधिक पवित्र है।' यों कहकर वे अन्तर्धान हो गये। भगवान् शिव के चले जाने पर गौतम ने उनकी आज्ञा से जटासहित सरिताओं में श्रेष्ठ गंगा को साथ ले देवताओं से घिरकर ब्रह्मगिरि में प्रवेश किया। उस समय सभी लोग ब्रह्मर्षि गौतम की जय-जयकार करते हुए प्रशंसा करने लगे।

गौतमजी ने जटा को ब्रह्मगिरि के शिखर पर रक्खा और भगवान् शंकर का स्मरण करते हुए गंगाजी से हाथ जोड़कर कहा-'तीन नेत्रोंवाले भगवान् शिवजी की जटा से प्रकट हुई माता गंगे! तुम सब अभिष्टों को देनेवाली और शान्त हो। मेरा अपराध क्षमा करो और सुखपूर्वक यहाँ से प्रवाहित होकर जगत् का कल्याण करो। देवि! मैंने तीनों लोकों का उपकार करने के लिये तुम्हारी याचना की है और भगवान् शंकर ने भी इसी उद्देश्य की सिद्धि के लिये तुम्हें दिया है। अतः हमारा यह मनोरथ असफल नहीं होना चाहिये।'

गौतम का यह वचन सुनकर भगवती गंगा ने उसे स्वीकार किया और अपने-आपको तीन स्वरूपों में विभक्त करके स्वर्गलोक, मर्त्यलोक एवं रसातल में फैल गयीं। स्वर्गलोक में उनके चार रूप

हुए, मर्त्यलोक में वे सात धाराओं में बहने लगीं तथा रसातल में भी उनकी चार धाराएँ हुईं। इस प्रकार एक ही गंगा के पंद्रह आकार हो गये। महर्षि गौतम के छोड़ने पर वे पूर्व समुद्र की ओर चली गयीं। उस समय देवर्षियों द्वारा सेवित कल्याणमयी जगन्माता गंगा की गौतमजी ने परिक्रमा की। इसके बाद उन्होंने देवेश्वर भगवान् शिव का पूजन किया। उनके स्मरण करते ही करुणासिन्धु भगवान् शिव वहाँ प्रकट हो गये। पूजा करके महर्षि गौतम ने कहा – 'देवदेव महेश्वर! आप सम्पूर्ण लोकों के हित के लिये मुझे इस तीर्थ में स्नान करने की विधि बताइये।'

भगवान् शिव बोले – महर्षि! गोदावरी में स्नान करने की सम्पूर्ण विधि सुनो। पहले नान्दीमुख श्राद्ध करके शरीर की शुद्धि करे, फिर ब्राह्मणों को भोजन कराये और उनसे स्नान करने की आज्ञा ले। तदनन्तर ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए गोदावरी नदी में स्नान करने के लिये जाय। उस समय पतित मनुष्यों से वार्तालाप न करे। जिसके हाथ, पैर और मन भलीभाँति संयम में रहते हैं, वही तीर्थ का पूरा फल पाता है। भावदोष (दुर्भावना) का परित्याग करके अपने धर्म में स्थिर रहे और थके – माँदे, पीड़ित मनुष्यों की सेवा करते हुए उन्हें यथायोग्य अन्न दे। जिनके पास कुछ नहीं है, ऐसे साधुओं को वस्त्र और कम्बल दे। भगवान् विष्णु एवं गंगाजी के प्रकट होने की दिव्य कथा सुने। इस विधि से यात्रा करनेवाला मनुष्य तीर्थ के उत्तम फल का भागी होता है।

गौतम! गोदावरी नदी में दो – दो हाथ भूमि पर तीर्थ होंगे। उनमें मैं स्वयं सर्वत्र रहकर सबकी समस्त कामनाओं को पूर्ण करता रहूँगा। सरिताओं में श्रेष्ठ नर्मदा अमरकण्टक पर्वत पर अधिक उत्तम मानी गयी है। यमुना का विशेष महत्व उस स्थान पर है, जहाँ वे गंगा से मिली हैं। सरस्वती नदी प्रभासतीर्थ में श्रेष्ठ बतायी गयी है। कृष्णा, भीमरथी और तुंगभद्रा – इन तीन नदियों का जहाँ समागम हुआ है, वह तीर्थ मनुष्यों को मुक्ति देनेवाला है। इसी प्रकार पयोष्णी नदी भी जहाँ तपती (ताप्ती) में मिली है, वह तीर्थ मोक्षदायक है; परंतु ये गौतमी गंगा मेरी आज्ञा से सर्वत्र, सर्वदा और सब मनुष्यों को स्नान करने पर मोक्ष प्रदान करेंगी। कोई – कोई तीर्थ किसी विशेष समय में देवता का शुभागमन होने पर अधिक पुण्यमय माना जाता है, किंतु गोदावरी नदी सदा ही सबके लिये तीर्थ है। मुनिश्रेष्ठ! ये गंगा निम्नांकित नामों से प्रसिद्ध होंगी – माहेश्वरी, गंगा, गौतमी, वैष्णवी, गोदावरी, नन्दा, सुनन्दा, कामदायिनी, ब्रह्मतेजःसमानीता तथा सर्वपापप्रणाशिनी। गोदावरी मुझे सदा ही प्रिय है। ये स्मरणमात्र से पापराशि का विनाश करनेवाली हैं।

(उपर्युक्त कथा गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित संक्षिप्त स्कंदपुराणांक, पृ. 922 – 923; संक्षिप्त शिवपुराण, कोटिरुद्रसंहिता, अध्याय 24 – 26 तथा संक्षिप्त मार्कण्डेय – ब्रह्मपुराणांक पृ. 385 – 388 पर आधारित है।)

❁❁❁❁❁❁